विद्या भवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

वर्ग दशम् विषय संस्कृत शिक्षक श्याम श्यामउदय सिंह

ता:-०७/०७/२०२० षष्ठ: पाठ: (सुभाषितानि)

२.अर्थ – गुणवान व्यक्ति गुण (के महत्व) को जानता है ,गुणहीन नही जानता । बलवान व्यक्ति बल (के महत्व) को जानता है ,बलहीन (निर्बल) नहीं जानता है। कोयल वसन्त ऋतु के (महत्व) गुण को जानती है,कौआ नहीं जानता है और हाथी सिंह के बल को जानता है,चूहा नहीं जानता है।

३. निमित्तमुद्दिश्य हि य: प्रकुप्यति,

ध्रुवं च तस्यापगमे प्रसीदति ।

अकारणद्वेषि मनस्तु यस्य वै ,

कथं जनस्तं परितोषयिष्यति ।।

•अन्वय:-

य: निमित्तं उद्दिश्य प्रकुप्यति स: तस्य अपगमे ध्रुव प्रसीदति यस्य मन: अकारणद्वेषि (अस्ति) तं जन: कथम् परितोषयिष्यति ?

शब्दार्था:

निमित्तम् -कारण को , स:- वह(व्यक्ति) , वै -निश्चय से ,

उद्दिश्य- उद्देश्य करके (ध्यान में रखकर) , तस्य – उस(कारण) के , कथम् -कैसे

अपगमे -समाप्त होने पर , तम् -उसको , स ध्रुवम् -निश्चय ही

हि- निश्चित रूप से , प्रसीदति -प्रसन्न हो जाता है , परितोषयिष्यति -संतुष्ट करेगा

प्रकुप्यति -क्रोध करता है , अकारद्वेषि -बिना कारण का द्वेष करने वाला

अर्थ- निश्चय ही जो किसी कारण से अत्यधिक क्रोध करता है , निश्चित रुप से वह उस कारण के समाप्त होने(मिट जाने)पर प्रसन्न भी हो जाता है । परन्तु जिसका मन किसी कारण के किसी से द्वेष करता है ,(फिर) मनुष्य उसे कैसे सन्तुष्ट करेगा ?